रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

विद्यार्थियों में विकसित करनी है हिन्दी में जीने की कला–कुलपति प्रो. मिश्र

हिन्दी पखवाड़ा समापन एवं अमृत महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन

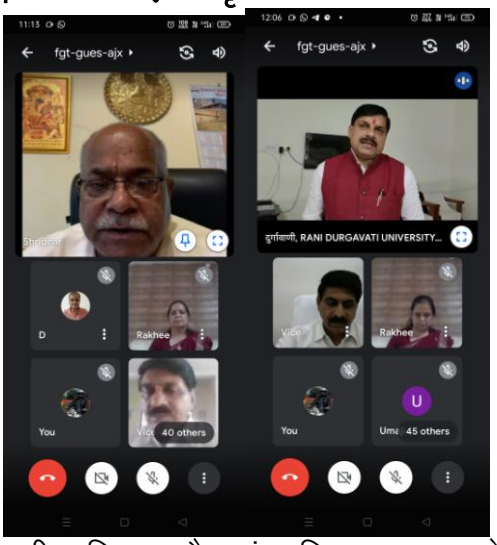

जबलपुर 27 सितम्बर। भारतीय विचार और संस्कृति का वाहक होने का श्रेय हिन्दी को ही जाता है। आज संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं में भी हिंदी की गूंज सुनाई देने लगी है। हमारे प्रधानमंत्री ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में ही अभिभाषण देकर इसके गौरव को बढ़ाने का कार्य किया। हिन्दी को जीने की कला विद्यार्थियों में विकसित करने का कार्य निरंतर प्रयास हमें करना है। ग्रामोदय से अन्तयोदय की संकल्पना राष्ट्रभाषा हिन्दी से ही संभव है। ये विचार माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने विवि के हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विभाग द्वारा द्वारा सोमवार को आयोजित हिन्दी पखवाड़ा समापन एवं अमृत महोत्सव के ऑनलाईन कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

"हिन्दीः राष्ट्रीय आंदोलन से भूमण्डीलीकरण तक" विषय पर आयोजित हिन्दी पखवाड़ा समापन एवं अमृत महोत्सव के ऑनलाईन कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि मान. उच्च शिक्षामंत्री मप्र शासन डॉ. मोहन यादव ने अपने संदेश में कहा कि आज देश को एकता की डोर में बांधने का काम अगर कोई एक भाषा कर सकती है तो वह सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी ही है। इस अच्छे अभियान के लिए शुभकामनाएं। मप्र शासन स्तर पर भी हिन्दी को बढ़ावा देने विशेष कार्य किये जा रहे हैं। वाचिक स्वागत व विषय प्रवर्तन प्रस्तुत करते हुए आयोजन संयोजक एवं विभागाध्यक्ष प्रो. धीरेन्द्र पाठक ने कहा कि हिंदी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन होने के नाते हिंदी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है। हिंदी जन–आंदोलनों की भी भाषा रही है। हिंदी के महत्त्व को गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बड़े सुंदर रूप में प्रस्तुत किया था। उन्होंने कहा था, 'भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी'। आज वैश्वीकरण के दौर में, हिंदी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है।

भाषा के प्रति स्वंय का आग्रह जरूरी–

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता मान. श्रीधर पराड़कर, राष्ट्रीय संगठन मंत्री अखिल भारतीय साहित्य परिषद ने कहा कि एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे

जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। भाषा के प्रति स्वयं का आग्रह होना जरूरी है भाषा के महत्व को समझकर भविष्य की तैयारी की जानी चाहिए।

हिन्दी को आगे ले जाने की तैयारी करें–

ऑनलाईन कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल ने भाषा वही जीवित रहती है जिसका प्रयोग जनता करती है। भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे बेहतर माध्यम हिन्दी है। इसलिए इसको एक–दूसरे में प्रचारित करना चाहिये। इस कारण हिन्दी दिवस के दिन उन सभी से निवेदन किया जाता है कि वे अपने बोलचाल की भाषा में भी हिंदी का ही उपयोग करें। हिन्दी के अग्रेताओं को इसके लिय तैयारी करना चाहिए।

पथ प्रदर्शक होते हैं ऐसे आयोजन –

ऑनलाईन कार्यक्रम में रादुविवि कुलसचिव प्रो. बृजेश सिंह ने सभी अतिथियों का आभार प्रदर्शित करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन पथ प्रदर्शक होते हैं। हिंदी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। आईए, हम सब मिलकर अपनी हिंदी लय को और मधुरता दें और प्रखरता प्रदान करें। ऑनलाईन कार्यक्रम का संचालन विवि हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विभाग अतिथि विद्वान श्रीमती राखी चतुर्वेदी ने किया। आयोजन में विभाग की अतिथि विद्वान डॉ. आशा रानी, डॉ. विपुला सिंह, डॉ. नीलम दुबे का सक्रिय योगदान रहा ।